International Journal of Arts & Education Research

ग्रामीण पर्यटन के विकास एवं संरक्षण

अन्नू कुमारी
शोधार्थी
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

डॉ राखी शुक्ला
माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मोती तबेला इंदौर मध्य प्रदेश

सार

यह शोध ग्रामीण पर्यटन के विकास और संरक्षण से सम्बंधित है जिसमे भारत की ग्रामीण पर्यटन का विस्तार किया है उसकी अवधारणा ,विकास , तथा विकास के आवश्यक तत्वों को बताया गया है तथा बढ़ते ग्रामीण पर्यटन का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ग्रामीण भारत में पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ लोगों के बीच व्यापार का स्तर बढ़ने से उनकी आय का स्तर भी बढ़ेगा। ग्रामीण पर्यटन पारंपरिक कृषि अर्थव्यवस्था के पतन के बाद ग्रामीण समुदायों की जटिल सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है। जिसका विवरण निम्नलिखित प्रस्तुत है ।

मुख्य शब्द : ग्रामीण , पर्यटन.

प्रस्तावना

भारत एक बहु–गंतव्य देश है जिसमें विविध प्रकार के पर्यटक आकर्षण और सेवाएं हैं। भारत के समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक इतिहास ने विशिष्ट स्थापत्य शैली, मंदिर शहर और विश्व प्रसिद्ध स्मारक बनाए हैं। पृष्ठभूमि के रूप में हिमालय के साथ, भारत के पर्वतीय पनाहगाह दुनिया में कुछ बेहतरीन स्थानों की पेशकश करते हैं जो सचमुच शरीर और आत्मा को शांत और पुनर्जीवित करते हैं। वर्ष 2005 में, कोंडे नास्ट ट्रैवलर ने भारत को दुनिया के 10वें चुने हुए गंतव्य के रूप में सूचीबद्ध किया। आश्चर्यजनक रूप से वर्ष 2006 में भारत चौथे स्थान पर आ गया है। भारत में वर्ष 2005 में अनुमानित 35 लाख विदेशी पर्यटक और 366 मिलियन घरेलू पर्यटक आए, जो 2003 से लगभग 30 प्रतिशत अधिक है। घरेलू पर्यटन के अगले पांच वर्षों में 20 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है।

ग्रामीण, एक ह्रासमान वैश्विक संसाधन, हमें पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण वातावरण प्रदान करता है। आपूर्ति पक्ष पर, इसके प्रभाव, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, अच्छी तरह से प्रलेखित हैं, व्यापक रूप से बहस और बढ़ते साहित्य के विषय हैं। हालांकि, अक्सर अनदेखी की जाती है, ग्रामीण आगंतुकों के लिए लाभ, बेहतर मानसिक और शारीरिक कल्याण के कल्याणकारी प्रभाव जो प्रकृति की पुनर्स्थापनात्मक और उपचारात्मक शक्तियों को आत्मसात करने के व्यापक रूप से मांगे गए (यदि कल्पना की गई) प्रभाव हैं। आपूर्ति और मांग का अभिसरण, जिसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जाता है, अलग–अलग रूप लेता है, भौतिक, सामाजिक और राजनीतिक वातावरण की एक विस्तृत श्रृंखला के

भीतर विकसित होता है, और परिणामों की एक विस्तृत विविधता में परिणाम होता है। ग्रामीण पर्यटन एक गतिशील परिघटना है, जो अपनी पहुंच के भीतर परिवर्तन पैदा करता है और प्रतिबिंबित करता है

मीणा (2015) के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन की धारणा उद्यमशीलता और रोजगार के अवसरों, आय सृजन, हस्तशिल्प के संरक्षण और विकास और पर्यावरण और विरासत के संरक्षण के माध्यम से स्थानीय समुदाय को लाभान्वित करना है। ग्रामीण पर्यटन विभिन्न जीवन शैली, संस्कृतियों और विश्वासों के लोगों को एक दूसरे के करीब लाएगा और जीवन का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने में मदद करेगा। उपरोक्त लाभों के अलावा, यह सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक मूल्यों को विकसित करने में भी मदद करेगा। शार्पली और वास (2006) इस बात पर जोर देते हैं कि ग्रामीण पर्यटन किसी न किसी रूप में मौजूद है। विभिन्न पर्यटन स्थलों में आकर्षण के मुख्य केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं; उनमें से कुछ पहाड़, झीलें, राष्ट्रीय उद्यान, सांस्कृतिक स्थल और अन्य हैं। इन पर्यटन स्थलों के अलावा, इस प्रकार के पर्यटन को वास्तविक ग्रामीण जीवन शैली का अनुभव करने के लिए भी बढ़ाया जा सकता है और क्षेत्र के स्थानीय लोग आसानी से पर्यटकों का अपने जीवन में स्वागत कर सकते हैं। ग्रामीण पर्यटन पारंपरिक कृषि अर्थव्यवस्था के पतन के बाद ग्रामीण समुदायों की जटिल सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों का समाधान करने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरा है।

रामकुमार और शिंदे (2008) के अनुसार, स्थानीय और विदेशी पर्यटकों दोनों के लिए अविश्वसनीय भारत को बढ़ावा देने के लिए, ग्रामीण पर्यटन पश्चिम में अपने सिद्ध परिणामों के साथ उपलब्ध सर्वोत्तम विकल्पों में से एक के रूप में विकसित हो रहा है। ग्रामीण भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ है। कला, शिल्प और संस्कृति की परंपराओं से समृद्ध ग्रामीण भारत महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में उभर सकता है। भारत में ग्रामीण पर्यटन का मौजूदा अनुमानित बाजार लगभग 4,300 करोड़ रुपये प्रति वर्ष है। इसमें विदेशी और स्थानीय दोनों पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता है। भारत में ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं में 310 मिलियन घरेलू पर्यटक संभावनाएं हैं। शहरी भारत की तुलना में श्अतिथि देवो भवश की अवधारणा ग्रामीण भारत में अधिक खुले तौर पर प्रचलित है। करनवाल और डबराल (2014) का अर्थ है कि शहरी जीवन शैली के दबाव ने काउंटर–शहरीकरण सिंड्रोम को जन्म दिया है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोग शहरों की हलचल के कारण थके हुए हैं और ग्रामीण जीवन शैली को आजमाने के इच्छुक हैं। इससे ग्रामीण जीवन में रुचि बढ़ी है। अन्य कारक हैं, जो ग्रामीण पर्यटन की ओर बदलाव के लिए जिम्मेदार हैं, वे हो सकते हैं जागरूकता के बढ़ते स्तर, विरासत और संस्कृति में बढ़ती रुचि, बेहतर पहुंच और शहरी निवासियों के बीच पर्यावरण जागरूकता।

कर्री (2016) ने कहा कि शहरी आबादी दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है, आज शहरी बच्चों की दुनिया बंद कमरे में स्कूल, कक्षाएं, टेलीविजन पर कार्टून कार्यक्रम, वीडियो गेम, चॉकलेट, शीतल पेय, मसालेदार फास्ट फूड, कंप्यूटर, इंटरनेट, और इसी तरह, और वे मदर नेचर को केवल टेलीविजन स्क्रीन पर देखते हैं लेकिन अब रुझान बदल गए हैं और अब शहरी शहरों में रहने वाले परिवार ग्रामीण भारत की जीवन शैली का पता लगाना चाहते हैं। वे अपने जमीनी स्तर पर वापस जाना चाहते हैं और अनुभव करना चाहते हैं कि उनके पूर्वजों ने शुरू में क्या किया था। वे अपने बच्चों को सच्चा भारत और प्रकृति

माँ दिखाना चाहते हैं जिसका अनुभव वे शहरों में नहीं कर सकते। शहरों में रहने वाले लोग शहर की दैनिक अराजकता से ऊब चुके हैं और ग्रामीण जीवन शैली में कदम रखने और ग्रामीण पर्यटन का अनुभव करने के इच्छुक हैं

ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा

भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा में स्पष्ट किया है कि कोई भी ऐसा पर्यटन, जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुँचता हो, साथ ही पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की सम्भावना हो, तो उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है। ग्रामीण पर्यटन अनिवार्यतः एक ऐसी गतिविधि है, जो देश के देहाती इलाकों में संचालित होती है। यह बहु–आयामी है, जिसमें खेत/कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक पर्यटन और पर्यावरण पर्यटन शामिल हैं। परम्परागत पर्यटन के विपरीत, ग्रामीण पर्यटन की कुछ खास विशेषताएँ हैं, जैसे यह अनुभव–उन्मुखी होता है, इसके पर्यटक स्थलों पर आबादी बिखरी हुई होती है, इसमें प्राकृतिक वातावरण की प्रमुखता होती है, यह त्योहारों और स्थानीय उत्सवों से सराबोर होता है और संस्कृति, धरोहर और परम्परा के संरक्षण पर आधारित होता है। भारत में पर्यटन मंत्रालय ने ऐसे ग्रामीण पर्यटक स्थलों के विकास पर विशेष बल दिया है, जो समृद्ध कला, संस्कृति, हथकरघा, धरोहर और शिल्प की दृष्टि से गौरवशाली हों। ये गाँव प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक वैभव दोनों ही दृष्टियों से समृद्ध हैं। ग्रामीण पर्यटन से यह उम्मीद की जाती है कि ग्रामीण उत्पादकता, ग्रामीण पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण, स्थानीय लोगों की भागीदारी की दृष्टि से ग्रामीण इलाकों के लाभ में वृद्धि हो और परम्परागत विश्वासों और आधुनिक मूल्यों के बीच उपयुक्त अनुकूलन में मदद मिले।

भारत में ग्रामीण पर्यटन के प्रमुख प्रकार

कृषि पर्यटन : कृषि उद्योग और फसलें उगाने के लिये किसान कैसे काम करते हैं, के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना।

संस्कृति पर्यटन : पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति विषयक गतिविधियों जैसे अनुष्ठानों और उत्सवों में हिस्सा लेने का अवसर प्रदान करना।

प्रकृति पर्यटन : ऐसे प्राकृतिक स्थलों की जिम्मेदारी के साथ यात्रा करना, जो पर्यावरण का संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों के कल्याण में सुधार लाते हैं।

साहसिक पर्यटन : कोई भी ऐसी रचनात्मक गतिविधि साहसिक पर्यटन के अन्तर्गत शामिल है, जो किसी व्यक्ति की क्षमता और अन्तिम सीमा तक उसकी तैयारी का परीक्षण करने का अवसर प्रदान करती है।

भोजन पर्यटन : जहाँ पर्यटकों को हमारे व्यंजनों की विविधता का आनन्द लेने का अवसर मिलता है। इस तरह का पर्यटन भोजन और विभिन्न स्थानों के प्रमुख भोजनों की जानकारी प्राप्त करने में मदद करता है।

समुदाय पारिस्थितिकी पर्यटन : यह ऐसा पर्यटन है, जो किसी उद्देश्य के लिये किया जाता है। यह वास्तव में ऐसे प्राकृतिक स्थलों की जिम्मेदारीपूर्ण यात्रा है, जो पर्यावरण संरक्षण करते हैं और स्थानीय लोगों की खुशहाली में सुधार लाते हैं।

नृजातीय पर्यटन : इसका उद्देश्य विभिन्न संस्कृतियों के क्षितिजों का विस्तार करना है। इसका अनिवार्य लक्ष्य विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक जीवनशैलियों और विश्वासों के बारे में जानकारी प्राप्त करना है।

ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक तत्व:

1. बुनियादी ढांचे का निर्माण
2. नीतियों का पुनर्गठन और उदारीकरण
3. निवेश के लिए प्रोत्साहन
4. कानून और व्यवस्था
5. पर्यटक पुलिस
6. शिकायतों से निपटना
7. वस्तुओं और सेवाओं का मानकीकरण
8. सरकारी सहायता

उद्देशय

1. भारत में ग्रामीण पर्यटन पर अधययन करना
2. ग्रामीण विकास के एक एजेंट के रूप में ग्रामीण पर्यटन पर अधययन करना

कुछ लोकप्रिय ग्रामीण पर्यटक स्थल

1) **कच्छ एडवेंचर्स इंडिया :** कच्छ में सामुदायिक पर्यटन – गुजरात में कच्छ के रण की यात्रा से पर्यटकों को कारीगरों के गाँव और साल्ट डेजर्ट देखने के अवसर मिलेंगे।
2) **इत्मिनान लॉजेज पंजाबियत :** ग्रामीण पंजाब में खेती – पर्यटक विभिन्न खेती गतिविधियों का जायजा ले सकते हैं।
3) **इकोस्फीयर स्पीति : उच्च तुंगता ग्रामीण पर्यटन** – बौद्ध मठों की यात्राएँ, याक सफारी, गाँवों की यात्राएँ, ग्रामीण पारिवारिक शैलियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्भावित गतिविधियाँ हो सकती हैं।

4) **लाचेन, सिक्किम** – यह बर्फ से ढकी चोटियों, हिम नदियों और रॉक क्लिप्स के बीच 8500 फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इसके चारों ओर मिश्रित शंकु वृक्षों और बुरुंश (एक प्रकार का फल) के जंगल हैं। यह स्थल पर्यटकों के लिये कुछ वर्ष पहले ही सुगम हुआ है। अतः अपनी अदोहित ताजगी बनाए हुए है।

ग्रामीण विकास के एक एजेंट के रूप में ग्रामीण पर्यटन

1994 के अंक में तीसरा और शायद केंद्रीय विषय ग्रामीण विकास में पर्यटन की संभावित भूमिकाओं का है। पर्यटन और विकास के बीच संबंधों की व्यापक मान्यता को दर्शाते हुए, कई कागजात स्थायी ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए रणनीतियों को संबोधित करते हैं, हालांकि ग्रीफ (2014) और गैनन द्वारा आर्थिक और सामाजिक विकास में पर्यटन की भूमिका को सबसे स्पष्ट रूप से माना जाता है। ग्रीफ (2014) के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन के विकास में 'प्राधिकारियाsa' को हस्तक्षेप करने के पांच कारण हैं, ये संभावित आकर्षक क्षेत्रों की सुरक्षा, आपूर्ति संरचनाओं का आधुनिकीकरण, विपणन, प्रशिक्षण और अवसरों का विस्तार करना है। ग्रामीण पर्यटन में भागीदारी। उत्तरार्द्ध समकालीन पत्रों में एक प्रमुख और आवर्ती विषय प्रतीत होता है।

यह लंबे समय से माना जाता है कि, हालांकि स्थायी ग्रामीण पर्यटन की एक आंतरिक विशेषता छोटे पैमाने का व्यवसाय है, विविध व्यवसायों की खंडित प्रकृति कई कमजोरियों को प्रकट करती है। हॉल इन्हें सीमित बाजार ज्ञान, निम्न गुणवत्ता वाले उत्पादों / सेवाओं, वित्त की कमी, पर्यटन और पर्यटकों के ज्ञान के निम्न स्तर और अपर्याप्त सहायक बुनियादी ढांचे के रूप में उद्धृत करता है। उनकी सूची, हालांकि दक्षिण–पूर्व यूरोपीय संदर्भ में लागू होती है, समकालीन ग्रामीण पर्यटन साहित्य में एक परिचित और आवर्ती विषय है। जैसा कि बार्के द्वारा सुझाया गया है, ग्रामीण पर्यटन के सफल विकास के लिए एक आवश्यक घटक नेटवर्क की स्थापना है – दोनों समान आपूर्तिकर्ताओं (जैसे आवास प्रदाता) और अन्य व्यवसायों के बीच जो कुल ग्रामीण पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए गठबंधन कर सकते हैं (एम्बैकर, 1994)। समान रूप से, सतत विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, ग्रामीण पर्यटन क्षेत्र का समर्थन करने वाली वस्तुओं और सेवाओं की स्थानीय आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नेटवर्क या बैकवर्ड लिंकेज स्थापित किए जाने चाहिए।

ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव

रचनात्मक प्रभाव

बढ़ते ग्रामीण पर्यटन का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ग्रामीण भारत में पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ लोगों के बीच व्यापार का स्तर बढ़ने से उनकी आय का स्तर भी बढ़ेगा। इससे युवाओं के लिये रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। किसी भी स्थान के परम्परागत हथकरघा और हस्तशिल्प स्थानीय लोगों के लिये गौरव का विषय होते हैं। पर्यटन के माध्यम से पर्यटकों को स्थानीय लोगों से तैयार उत्पाद सीधे खरीदने का लाभ प्राप्त होता है। इसका समूची अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक

प्रभाव पड़ता है। पर्यटकों के साथ विचारों के आदान–प्रदान से ग्रामीण लोगों में नये विचार सृजित होंगे। इससे शिक्षा, निवारक स्वास्थ्य देखभाल, आधुनिक उपकरणों आदि के प्रति लोगों की रुचि बढ़ेगी। इससे साक्षरता का सर्वत्र प्रसार करने में भी मदद मिलेगी।

अधिकाधिक पर्यटकों द्वारा गाँवों की यात्रा करने से सड़कों के माध्यम से सम्पर्क में सुधार आएगा और सार्वजनिक परिवहन में बढ़ोत्तरी होगी। अभ्यारण्यों और सुरक्षित उद्यानों के निकट रहने वाले ग्रामीण अपने शहरी सहभागियों को प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा दे सकते हैं। सदियों से प्रकृति की शरण में रहने के कारण उन्हें प्रकृति के संरक्षण के तौर–तरीकों की जानकारी निश्चित रूप से अधिक होती है। पर्यटक स्थानीय धार्मिक और परम्परागत अनुष्ठानों में रुचि विकसित कर सकते हैं, जो सामाजिक सद्भाव के प्रेरक के रूप में काम कर सकती है।

नकारात्मक प्रभाव

परन्तु, ग्रामीण पर्यटन पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ सकते हैं। पर्यटन के लिये सुविधाएँ जुटाने से देहात में बुनियादी ढाँच के विकास में बढ़ोत्तरी होगी। इससे ग्रामीण क्षेत्र में कंक्रीट बढ़ेगा, जिससे उनका प्राकृतिक सौन्दर्य कम हो सकता है। इसके अलावा, पर्यटकों की बढ़ती संख्या से प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी हो सकती है।पर्यटन का लोगों की परम्परागत जीविका पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। ग्रामीण आबादी कृषि और अन्य परम्परागत जीविका माध्यमों की बजाए पर्यटन से सम्बद्ध आकर्षक जीविका माध्यमों में स्थानान्तरित हो सकती है। इससे ग्रामीण पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

ग्रामीण पर्यटन में चुनौतियाँ और अवसर

अन्य पारंपरिक नौकरियां इसके लायक नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या यह है कि उनमें से ज्यादातर कृषि में लगे हुए हैं, उनमें से कुछ कारीगर हैं लेकिन उनका कोई भी पारंपरिक व्यवसाय पारिश्रमिक नहीं है। ग्रामीण परिवार में एक या दो कमाने वाले सदस्यों और उच्च खपत व्यय के साथ संघर्ष कर रहे हैं। कुछ वर्जनाओं और साक्षरता के कारण, उनमें से अधिकांश अभ्यास नहीं कर रहे हैं। बड़ा परिवार कम आय और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी। चूँकि गाँव में कमाई में वृद्धि की गुंजाइश बहुत कम है, जहाँ उन्हें कमाने का कुछ मौका मिलता है। आज भारत में ग्रामीण पलायन एक बड़ी समस्या बन गया है। ग्रामीण पर्यटन विकास कई नई आर्थिक गतिविधियों, अधिक मांगों, सेवाओं के लिए प्रतिस्पर्धा और कभी–कभी अधिक अपराध को जन्म दे सकता है। ग्रामीण पर्यटन के आगमन के साथ, ग्रामीण पर्यटन को बढ़ाने के लिए एक योजना विकसित करते समय स्थानीय समुदायों के लिए चुनौतियों और अवसरों का अनुमान लगाने के लिए क्षेत्रों में वैसी जगह नहीं होगी। पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए आवश्यक प्रमुख चुनौतियाँ, शिक्षा की आवश्यकता, पर्यटकों और स्थानीय लोगों दोनों के लिए उचित समझ और एक लोकतांत्रिक आंदोलन उत्पन्न करने की आवश्यकता जो सभी स्तरों के लोगों को पर्यटन विकास में भाग लेने में मदद करे।

सुधार की सम्भावनाएँ

1. जीवन की प्रत्येक पहलू के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्ष होते हैं। स्थायी विकास के लिये यह जरूरी है कि रचनात्मक प्रभाव अधिक हों और नकारात्मक प्रभाव कम पड़ें। यही बात ग्रामीण पर्यटन पर भी लागू होती है।
2. पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में सहज महसूस करें, इसके लिये उन्हें उनके गन्तव्य स्थान के बारे में पहले से ही विस्तृत जानकारी प्रदान की जा सकती है। उन्हें किसी क्षेत्र में प्रचलित विशेष रीति–रिवाजों की भी जानकारी दी जा सकती है ताकि वे तदनुरूप अपने को तैयार कर सकें।
3. गाँवों में बुनियादी ढाँचा और लॉजिस्टिक सुविधाएँ मुहैया कराने की आवश्यकता है। निकटतम रेलवे स्टेशन या राजमार्ग को जोड़ने वाली सड़कों की व्यवस्था से गाँवों तक पहुँच में सुधार किया जा सकता है। इससे पर्यटकों के साथ–साथ ग्रामवासियों को भी लाभ पहुँचेगा, परन्तु यह बेहतर होगा कि ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा संख्या में होटल या गेस्ट हाउस बनाने की बजाए होम–स्टे (घरों में ठहरने की सुविधा) को तरजीह दी जाए। इससे पर्यटकों को ग्रामीण भारत में प्रचलित स्थानीय व्यंजनों के साथ–साथ परम्परागत पद्धतियों का भी जायका मिलेगा। इससे पर्यटकों को कम समय में ग्रामवासियों के साथ जुड़ने में मदद मिलेगी।
4. ग्रामीण भारत में पाई जाने वाली वनस्पतियाँ और जीव–जन्तु विद्यार्थियों के लिये सीखने का अच्छा स्रोत हो सकते हैं। विद्यार्थियों को भ्रमण की अनुमति सक्षम प्राधिकारियों की समुचित मंजूरी के बाद दी जा सकती है। इस तरह विद्यार्थी प्रकृति को महत्त्व देना सीखेंगे। पर्यटन के मामले में भाषा एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा हो सकता है। अतः कठिनाई होने की स्थिति में पर्यटकों को दुभाषिए रखने का विकल्प दिया जा सकता है। इस प्रयोजन के लिये दुभाषियों को प्रशिक्षित और योग्य बनाने की आवश्यकता है।

भारत के अधिकतर गाँवों की पारम्परिक पहचान है, जो उन्हें बेजोड़ बनाती है। ऐसे अनेक परम्परागत उत्पादों को भौगोलिक संकेतक या जीआई टैग प्रदान करते हुए मान्यता दी गई है। इनमें कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प, वस्त्र उत्पाद, मिठाइयाँ, प्राकृतिक वस्तुएँ, विनिर्मित वस्तुएँ, पवित्र वस्तुएँ आदि शामिल हैं। इन सभी जीआई टैगयुक्त उत्पादों को हमेशा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित किया जाता है और उनकी बाजार में भारी माँग रहती है। सरकार यह सुनिश्चित करने के उपाय कर सकती है कि पर्यटक इन उत्पादों के बनने, पैक किये जाने और प्रदर्शित किये जाने की समूची प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें। इससे पर्यटकों में रुचि और बढ़ेगी और अन्ततः ग्रामीण क्षेत्रों में आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी। भारत के अनेक राज्य जड़ी–बूटियों और अन्य आयुर्वेदिक उत्पादों की दृष्टि से सम्पन्न हैं, जो चिकित्सा की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। सरकार ऐसे पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये उपयुक्त ढाँचे का विकास कर सकती है, जो भारत के गाँवों में उपचार सुविधाएँ पाने के इच्छुक हों। जहाँ तक ग्रामीण पर्यटन का प्रश्न है, राज्य सरकारों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक राज्य सरकार की पर्यटकों को आकर्षित करने की पृथक क्षमता है।

अतः यह जरूरी है कि राज्य सरकारें अपनी इस क्षमता की पहचान करें और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने में केन्द्र सरकार के साथ घनिष्ठ समन्वय स्थापित करें। इससे समूचे देश को पर्यटन क्षेत्र में लाभ पहुँचेगा। पर्यटकों को इस बात की अग्रिम जानकारी दी जा सकती है कि वे ऐसे स्थानीय मुद्दों में न उलझें, जिनसे कानून–व्यवस्था की समस्याएँ पैदा होने की आशंका हो। सरकार पर्यटकों के बीच सर्वेक्षण करा सकती है और उनके लक्षित पर्यटक–स्थल के बारे में उनकी भावनाएँ जान सकती है। उनके फीडबैक के आधार पर पर्यटन में सुधार लाने के उपाय किये जा सकते हैं।

उपसंहार

अतुल्य भारत अभियान के माध्यम से घरेलू और अंतरराष्ट्रीय यात्रियों दोनों के लिए ग्रामीण पर्यटन भारत को बढ़ावा देने के सर्वोत्तम विकल्पों में से एक के रूप में उभर रहा है। जो स्थान समृद्ध परंपराओं, विरासत और मूल्यों के लिए प्रसिद्ध हैं, उनका अच्छी तरह से विपणन किया जाना चाहिए ताकि लोगों को पुरानी संस्कृतियों के बारे में पता चल सके। ग्रामीण पर्यटन का अनुमानित बाजार लगभग 4300 करोड़ रुपये प्रति वर्ष है। इन क्षेत्रों में आने वाले पर्यटक कॉटेज, होम स्टे, फार्म में शामिल होने, कैंपिंग मूवमेंट आदि किराए पर देते हैं। इस क्षेत्र को बढ़ावा देने का मुख्य उद्देश्य इसकी मूल परंपराओं और मूल्यों को बनाए रखना है। इस योजना के माध्यम से पर्यटक जीवन शैली, प्रामाणिकता और रीति–रिवाजों से परिचित होते हैं। उनके बीच बातचीत के साथ, स्थानीय लोगों को अपनी संस्कृति की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित किया जा सके। इसे अलग नजरिए से देखने पर समाज के लिए भी फायदेमंद होता है। सार्वजनिक क्षेत्रों का रखरखाव किया जाता है, क्षेत्र का सौंदर्यीकरण किया जाता है और पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए कदम उठाए जाते हैं। स्थानीय लोगों को योजना में गाइड के रूप में नियोजित किया जाता है; समुदाय के सदस्यों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योग के पेशेवरों द्वारा आयोजित संगोष्ठियों में भाग लें। समग्र समृद्धि है। स्थानीय लोग योजना को उनके लिए अनुकूल मानते हैं और यही कारण है कि वे इसका समर्थन करते हैं। वे अपने क्षेत्र और आजीविका के विकास में योजनाओं और योजनाओं को अच्छी तरह समझते हैं।

संदर्भ सूचि:

[1]. कर्री, गोपाल नायडू, भारत में कृषि पर्यटन का दायरा, पीजीडीएमए निबंध, आईसीएआर–राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान अकादमी प्रबंधन, हैदराबाद, 2016.

[2]. मैरिसिया, ड्रुतु और डोरोबंटू, मारिया रोक्साना, कृषि पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन के बीच संबंध सतत विकास अवधारणा, ग्रामीण पर्यावरण से विकास गतिविधियां, द ट्रिब्यूना इकोनॉमिका जर्नल, नंबर 33 /,पीपी.82–83, 2013

[3]. मीना, शिवराज, राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन प्रभाव, चुनौतियां और अवसर, द जर्नल ऑफ बंगाल जियोग्राफर, वॉल्यूम। प्ट, नंबर प्ट, ैप्छ 2319–619ग, अक्टूबर, 2015.

[4]. रामकुमार, ए और शिंदे, राजश्री, ग्रामीण पर्यटन में उत्पाद विकास और प्रबंधन (महाराष्ट्र के संदर्भ में), भारत में पर्यटन पर सम्मेलन – आगे की चुनौतियां, आईआईएम (के), मई 2008

[5]. सक्सेना गुंजन एंड इलबेरी, ब्रायन, इंटीग्रेटेड रूरल टूरिज्मरू ए बॉर्डर केस स्टडी, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, वॉल्यूम। 35, नंबर 1, पीपी.233–254, 2008 0160–7383, 2007.

[6]. शार्पली, आर., वास, ए., पर्यटन, खेती और विविधीकरणरू एक मनोवृत्ति अध्ययन। पर्यटन प्रबंधन 27, पी. 1040–1052, 2006

[7]. शिन, वाई, सुरक्षा, सुरक्षा और शांति पर्यटनरू डीएमजेड क्षेत्र का मामला। पर्यटन अनुसंधान के एशिया प्रशांत जर्नल, 10(4),411–426, 2005.

[8]. शार्पली आर, शार्पली जे। 1997। ग्रामीण पर्यटनरू एक परिचय। इंटरनेशनल थॉमसन बिजनेस प्रेसरू लंदन।

[9]. ग्रीफ एक्स. 2014. क्या ग्रामीण पर्यटन आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए एक उत्तोलक है?, सतत पर्यटन जर्नल 2(1 + 2)रू 22–40।

[10]. शार्पली आर, क्रेवेन बी 2001। 2001 फुट एंड माउथ संकट – ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पर्यटन नीति के निहितार्थरू एक टिप्पणी। पर्यटन में वर्तमान मुद्दे 4(6)रू 527–537।

[11]. मधुरा रॉय (2017) ग्रामीण पर्यटन : विकास और की ओर, हिंदी द्वारा सूर्य, 01/21/2018 – 12:33 को जमा किया गया। ईमेल: madhuraroy@gmail-com.